BA-3, Paper-5th
Topic - लोक निगम
Date - 20.07.2020
Seema Kumari, Asst. Prof. (Pol. sc.)., RMC. VKSU.

लोक निगम -

सरकार आवश्यक उद्यमों की व्यवस्था के लिए विभागों का संगठन करती है किंतु विभागों के संचालन में अत्यधिक असुविधा और कठिनाइ आती है। अतः वर्तमान ~~समाज की~~ व्यवस्था में सरकारी क्षेत्र में निगम व्यवस्था का प्रचलन हो गया है। निगम व्यवस्था में व्यापारिक स्वतंत्रता तथा सरकारी नियंत्रण दोनों का अद्भुत समन्वय पाया जाता है।

रूजवेल्ट के शब्दों में "निगम सरकार की शक्ति का जामा पहने होता है परंतु उसमें व्यक्तिगत उद्यम के लिए लोचशीलता पाइ जाती है।"

डीमॉक के शब्दों में "सरकारी निगम जनता द्वारा संचालित ऐसा उद्योग है जो संघीय राज्य अथवा स्थानीय राज्य के उद्देश्य के लिए किसी विशेष व्यवसाय को संचालित करता है।"

प्रो फिफनर "सरकारी निगम विभिन्न व्यक्तियों को एक व्यक्ति के रूप में कार्य करने की व्यवस्था करता है। इस प्रकार निगम एक कृत्रिम व्यक्तित्व के रूप में कार्य करता है। यह किसी कार्य को करने के लिए शक्तियों से लैस होता है।"

ग्लैडन के अनुसार निगम की तीन विशेषताएं होती हैं:-

1. कानून द्वारा स्थापित होना।
2. अपने कार्य में पर्याप्त स्वतंत्रता रखना।
3. सार्वजनिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कार्य करना।

इसकी स्थापना के प्रधान कारण हैं - राज्य के कार्यों में वृद्धि, इन कार्यों को सरकारी विभागों द्वारा करने में असमर्थता तथा संयुक्त पूंजीवाली कंपनियों द्वारा इन कार्यों का न किया जाना।

Scanned with CamScanner

लोक निगम के सामान्य लक्षण निम्नलिखित है :-

1. कानून द्वारा निर्माण - सरकारी व्यवस्थापिका द्वारा निर्मित कानून द्वारा होता है। इस कानून के अंतर्गत लोक निगम के उद्देश्य, उसकी शक्तियों एवं कार्यों का वर्णन किया जाता है।
2. स्वतंत्र व्यक्तित्व - इसके एक वैधानिक व्यक्तित्व प्राप्त होता है लो नि के विरुद्ध कोई भी न्यायिक कार्यवाही कर सकता है। यह समझौता कर सकता है।
3. निश्चित लक्ष्य - इसका कार्य व्यापारिक एवं औद्योगिक प्रकृति के होते हैं तथापि लोक निगम का प्रमुख लक्ष्य लाभोपार्जन न होकर जन सेवा होता है।
4. वित्तीय स्वायतता प्राप्त होती है।
5. स्वायतशासी कार्य - मुख्य कार्यपालिका उसके दैनिक कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करती है।
6. शासकीय कर्मचारियों से भिन्न कार्यशैली - उनकी सेवा शर्तें प्रबंध एवं नियंत्रण आदि नागरिक अधिकारों की अपेक्षा व्यापारिक संगठनों के अधिक अनुरूप होते हैं।
7. लाभोपार्जन की भावना का अभाव होता है।
8. मंत्रियों के साथ सम्मानजनक संबंध होता है।
9. एकाधिकारी प्रवृत्ति - निगम के कार्य एकाधिकार प्रवृत्ति के होते हैं,

सरकारी निगम का उद्देश्य :-

1. ऋण की सुविधा - निगम साधारण से साधारण व्यक्ति द्वारा संचालित उद्योग के लिए ऋण की व्यवस्था करता है।
2. क्षेत्र विशेष के बहुमुखी विकास के लिए - पुर्नवास वित्त आयोग, दामोदर घाटी निगम, डेयरी प्रोजेक्ट आदि इसी श्रेणी में आते हैं।
3. विभिन्न प्रांतों में औद्योगिक विकास के लिए इस प्रकार के विभिन्न निगमों की स्थापना की गई है।

Next Notes →

Scanned with CamScanner